International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 11, Issue 10, Oct 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

छात्रों में सोशल मीडिया को लत और शैक्षणिक स्तर पर प्रभाव
(खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

शोधार्थी – शिवराम हिरवे (समाजकार्य)

शोध निर्देशक – डॉ. एम.एल. मोरे, सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र),शासकीय महाविद्यालय, भीकनगांव,

शोध केंद्र – डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डा. बी. आर. अंबेडकर नगर महू (म.प्र.)

सारांश – 21वीं सदी में दुनिया ने सोशल मीडिया की क्रांति के युग में प्रवेश किया है और इस डिजिटल क्रांति से देश–विदेश में कई राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक बदलाव देखने को मिले हैं। आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूजर हैं और अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2024 के अंत तक यह संख्या लगभग 447 मिलियन तक पहुँच जाएगी।

प्रस्तावना – प्रत्येक वर्ष 30 मई को **'सोशल मीडिया दिवस'** मनाया जाता हैं। इसका उद्देश्य लोगो को सोशल मीडिया के इतिहास और उसके विकास से अवगत कराना हैं। आज के तेजी से बदलते समय में लोगों के बीच सोशल मीडिया काफी लोकप्रिय हो रहा हैं।

वर्तमान युग सूचना, संचार के अलावा साइबर या नेटवर्किंग का युग है। संचार मानवीय संबंध से जुडा है, जिसके अंतर्गत दो या दो अधिक व्यक्ति किसी जानकारी को साझा करने के अलावा आपसी मेलजोल, खाने–खिलाने के बारे में बात करना आदि आता है। मनुष्य के लिये संचार व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से एक अति आवश्यक साधन है। अर्थात संचार व्यक्तिगत जरूरतों के साथ ही सामाजिक अस्तित्व हासिल करने के लिये भी एक अनिवार्यता है। संचार अर्थात अपने वातावरण से संवाद करना है। संचार से इंसान के जुडाव की शुरूआत उसके इंसान बनने के आरंभ के दौर से ही होती है।

समय के साथ सोशल मीडिया तेजी से विस्तृत और प्रसारित हो रहा है तकनीक की दुनिया में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है और हमें नित नए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स देखने को मिल रहे हैं। भारत सरकार की तरफ से भी स्टार्टअप इंडिया और मेड इन इंडिया प्रोजेक्ट के तहत कई देसी एप्स लांच किए गए हैं, जिसने सोशल मीडिया की दुनिया में क्रांति ला दी है। आज पूरी दुनिया में लगभग 4.30 सौ करोड़ एक्टिव सोशल मीडिया यूजर्स है।यानी दुनिया के कुल आबादी में इस समय 53 प्रतिषत लोग सोशल मीडिया पर है।

अध्ययन का क्षेत्रः–

मध्य प्रदेष के खरगोन जिले को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अध्ययन का समग्र :–

मध्य प्रदेष के खरगोन जिले के 5 महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी अध्ययन का समग्र है।

अध्ययन की इकाई :–

मध्य प्रदेष के खरगोन जिले के 5 महाविद्यालयों में अध्ययनरत् चयनित विद्यार्थी अध्ययन की इकाई है।

निदर्शन विधि :–

प्रस्तुत षोध अध्ययन हेतु मध्यप्रदेष के खरगोन जिले के समस्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 220 छात्र एवं छात्राओं को उद्देश्यपूर्ण निदर्षन विधि का प्रयोग कर चयन किया गया है।

उत्तरदाताओं का चयन :–

मध्य प्रदेष के खरगोन जिले में कुल पांच षासकीय महाविद्यालय यथा शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगौन, शासकीय कन्या महाविद्यालय खरगौन, शासकीय महाविद्यालय कसरावद, शासकीय महाविद्यालय बड़वाह, शासकीय महाविद्यालय भीकनगांव हैं। प्रत्येक महाविद्यालय से 22 छात्र एवं 22 छात्राओं कुल 44 विद्यार्थी, इसी प्रकार 5 महाविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 220 छात्र एवं छात्राओं को उद्देश्यपूर्ण निदर्षन विधि का प्रयोग कर चयन किया गया है। जिसका विवरण अग्र तालिका में प्रस्तुत किया गया है :–

चर :–

वर्तमान अध्ययन में दो प्रकार के चर शामिल होंगे, जिनमें से एक आश्रित चर एवं एक स्वतंत्र चर है।

स्केल :–

वर्तमान अध्ययन में शैक्षणिक तनाव, उपलब्धि प्रेरणा और अध्ययन आदत का आकलन करने के लिए तीन उपायो का उपयोग किया गया है।

शैक्षणिक प्रदर्शन स्केल (Academic Performance Scale)

सोशल मीडिया स्केल (Social Media Addiction Scale)

आँकड़ो का संकलनः–

1. **प्राथमिक स्त्रोतः–**

साक्षात्कार अनुसूची, प्रष्नोत्तरी एवं व्यक्तिगत उपस्थित होकर संबंधित व्यक्तियों से समक्ष में चर्चा कर आकडें एकत्रित किये गये एवं विष्लेषण व अवलोकन द्वारा प्राथमिक आँकड़ो का संकलन किया गया।

2. **द्वितीय स्त्रोतः–**

शासकीय दस्तावेजों, पुस्तकों, जनगणना रिपोर्ट, समाचार–पत्र, शोधपत्र–पत्रिकाएँ, प्रकाषित एवं अप्रकाषित अभिलेख तथा तकनीकी के माध्यम से आधुनिक दृष्य–श्रव्य, कम्प्यूटर, मोबाईल, टी. व्ही., इण्टरनेट इत्यादि से जुड़कर अध्ययन किया गया है।

यंत्र एवं तकनीक :–

षैक्षणिक प्रदर्षन स्केल (Academic Performance Scale), सोषल मीडिया स्केल (Social Media Addiction Scale), साक्षात्कार अनुसूची, समूह चर्चा, अवलोकन, कैमरा एवं इंटरनेट आदि यंत्र एवं तकनीक का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण :–

षैक्षणिक प्रदर्षन स्केल (Academic Performance Scale) एवं सोशल मीडिया स्केल (Social Media Addiction Scale) के माध्यम से एकत्र किए गए आंकडों का विश्लेषण के माध्यम से सहसंबंध विधि, $\chi 2$ (काई–वर्ग) परीक्षण द्वारा के विश्लेषण किया गया है।

खरगोन जिले के महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का सोशल मीडिया के उपयोग की लत से शैक्षणिक स्तर पर प्रभाव निम्न प्रकार से पडता ह–

सारिणी क्रं.– 1

उत्तरदाता से सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पडने के बारे मे जानने का वर्गीकरण

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	102	46.4 प्रतिशत
नहीं	84	38.2 प्रतिशत
थोडा बहुत	28	12.7 प्रतिशत
बिल्कुल नहीं	6	2.7 प्रतिशत
योग	220	100.0

आरेख क्रं. – 1

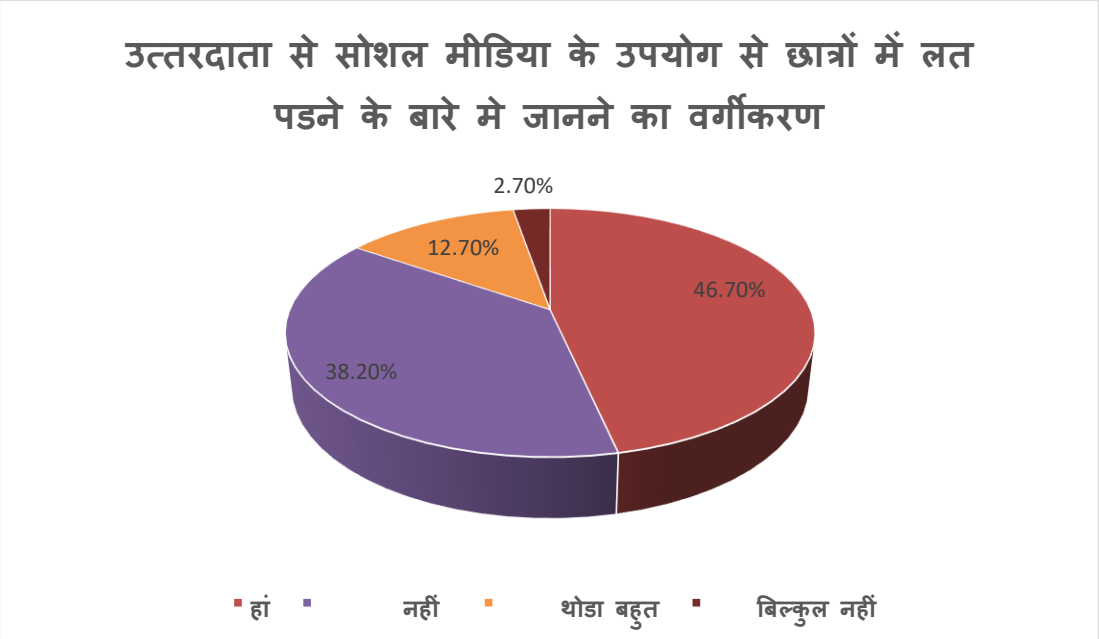

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पडने के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं में से 102 उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पड रही है, जिसका 46.4 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 84 उत्तरदाता ने अस्वीकार किया है जिसका 38.2 प्रतिशत है। उसी प्रकार 28 उत्तरदाताओं ने थोडी बहुत लत पडने की बात कही है जिसका 12.7 प्रतिशत है जबकि 6 उत्तरदाताओं ने लत बिल्कुल नहीं पडने की बात कही है जिसका 2.7 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पडने के को स्वीकार किया है।

सारिणी क्रं.– 2

उत्तरदाता से क्या आप मानते है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है, के बारे मे जानने का वर्गीकरण

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	128	58.2 प्रतिशत
नहीं	92	41.8 प्रतिशत
योग	220	100.0

आरेख क्रं. – 2

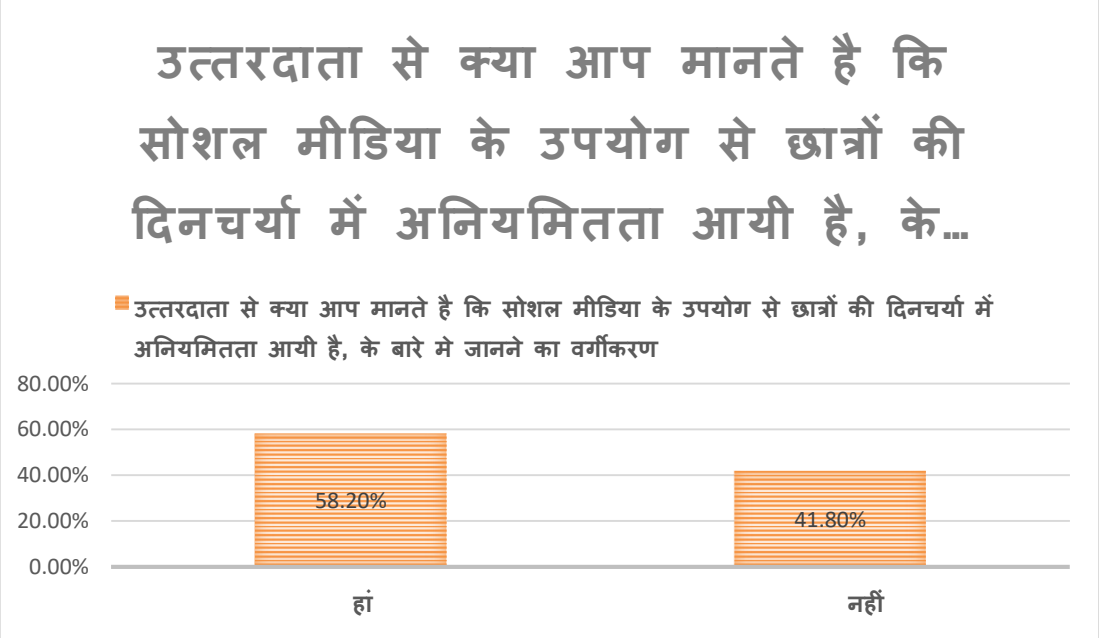

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से क्या आप मानते है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है, के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं में से 128 उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है, जिसका 58.2 प्रतिशत है जबकि 92 उत्तरदाताओं ने इसे अस्वीकार किया है जिसका 41.8 प्रतिशत है जो कि बहुत कम है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है।

सारिणी क्रं.– 3

उत्तरदाता से सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट पडने के बारे मे जानने का वर्गीकरण

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	167	75.9 प्रतिशत
नहीं	53	24.1 प्रतिशत
योग	220	100.0

आरेख क्रं. – 6.29

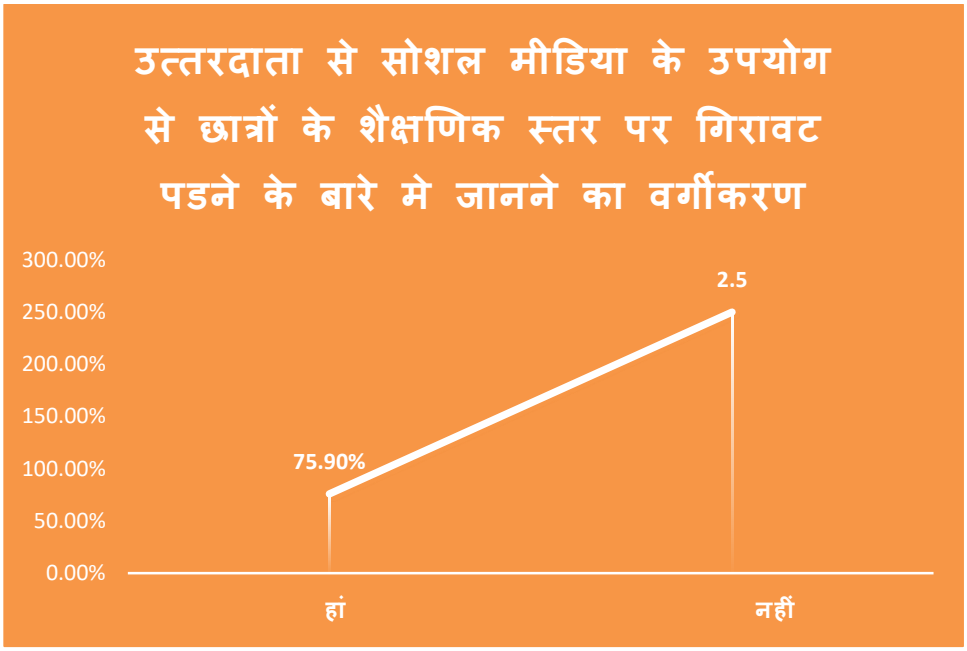

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट पडने के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं ने यह बात स्वीकार की है कि हां सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट आई है जिसका 75.9 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 53 उत्तरदाताओं ने इस बात को अस्वीकार किया है, नहीं सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट नहीं आई है जिसका 24.1 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट आई है।

सारिणी क्रं.– 4

उत्तरदाता से सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई किस हद तक प्रभावित होने के बारे मे जानने का वर्गीकरण

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
बहुत ज्यादा	105	47.7 प्रतिशत
बहुत कम	97	44.1 प्रतिशत
क कोई प्रभाव नहीं पड रहा है	18	8.2 प्रतिशत
योग	220	100.0

आरेख क्रं. – 4

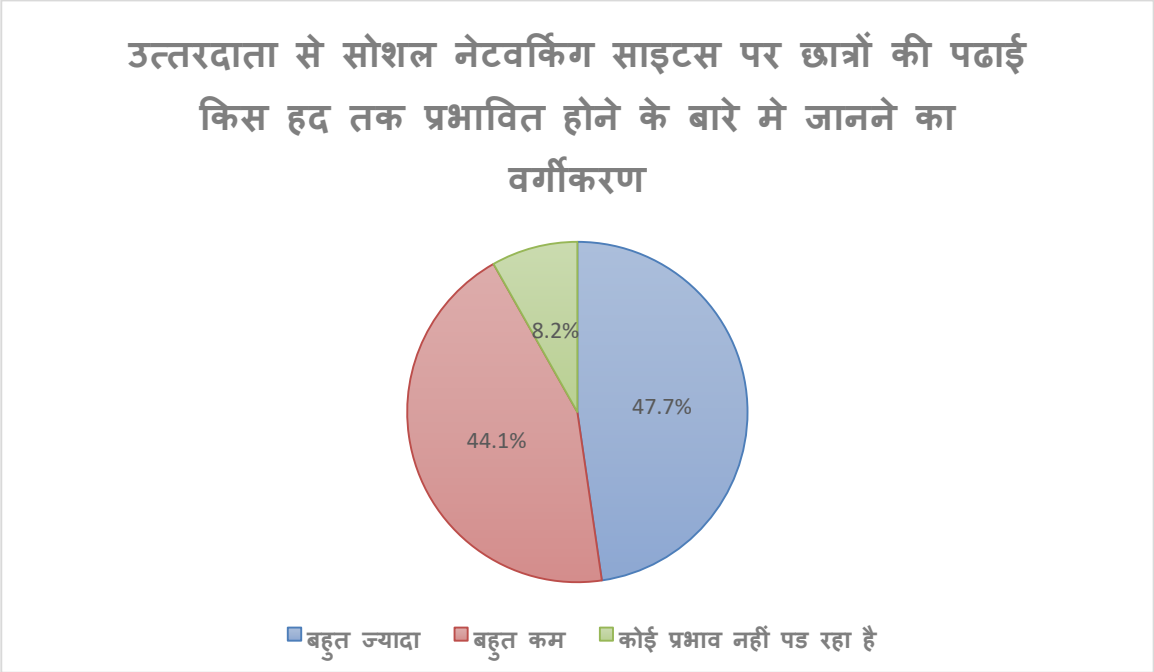

उपरोक्त सारिणी में उत्तरदाता से सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई किस हद तक प्रभावित होने के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं में से 105 उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस से छात्रों की पढाई पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडता है, जिसका 47.7 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 97 उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई बहुम कम प्रभाव पडता है जिसका 44.1 प्रतिशत है एवं 18 उत्तरदाता का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस से छात्रों की पढाई पर कोई प्रभाव नहीं पडता है जिसका 8.2 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। इससे स्पष्ट है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडता है।

निष्कर्षः–

- खरगोन जिले के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग से लत पडने के बारे में जानने पर ज्ञात हुआ कि 220 उत्तरदाताओं में से 102 उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पड रही है, जिसका 46.4 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 84 उत्तरदाता ने अस्वीकार किया है जिसका 38.2 प्रतिशत है। उसी प्रकार 28 उत्तरदाताओं ने थोडी बहुत लत पडने की बात कही है जिसका 12.7 प्रतिशत है जबकि 6 उत्तरदाताओं ने लत बिल्कुल नहीं पडने की बात कही है जिसका 2.7 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों में लत पडने के को स्वीकार किया है।
- उत्तरदाताओं से क्या आप मानते है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है, के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं में से 128 उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि हां सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है, जिसका 58. 2 प्रतिशत है जबकि 92 उत्तरदाताओं ने इसे अस्वीकार किया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में कोई अनियमितता नहीं आयी है, जिसका 41.8 प्रतिशत है जो कि बहुत कम है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आयी है।

- उत्तरदाता से सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट पडने के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं ने यह बात स्वीकार की है कि हां सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट आई है जिसका 75.9 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 53 उत्तरदाताओं ने इस बात को अस्वीकार किया है कि नहीं सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर कोई गिरावट नहीं आई है जिसका 24.1 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों के शैक्षणिक स्तर पर गिरावट आई है।
- उत्तरदाता से सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई किस हद तक प्रभावित होने के बारे मे जानने का वर्गीकरण करने पर 220 उत्तरदाताओं में से 105 उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस से छात्रों की पढाई पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडता है, जिसका 47.7 प्रतिशत है जो कि सबसे अधिक है जबकि 97 उत्तरदाताओं का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई बहुत कम प्रभाव पडता है जिसका 44.1 प्रतिशत है एवं 18 उत्तरदाता का कहना है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस से छात्रों की पढाई पर कोई प्रभाव नहीं पडता है जिसका 8.2 प्रतिशत है जो कि सबसे कम है। इससे स्पष्ट है कि सोशल नेटवर्किंग साइटस पर छात्रों की पढाई पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडता है।

सुझाव :–

- वर्तमान में विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के लत की आदत पड गई है, इसलिये सोशल मीडिया में विद्यार्थियों के लिये उपयोगी एप्स अधिक से अधिक बनाये लायें जिससे वे अपने शैक्षणिक स्तर में सुधार कर सकें।
- सोशल मीडिया के उपयोग से छात्रों की दिनचर्या में अनियमितता आई है इसलिये उन्हें सोशल मीडिया से दूरी बनायें रखने की आवश्यकता है, जिससे वे अपने नियमित दिनचर्या को बनाये रखने की कोशिश कर सकते है।
- सोशल मीडिया के उपयोग की लत से छात्रों के शैक्षणिक स्तर में गिरावट आई है, इसे छात्रों को स्वीकारना होगा और सोशल मीडिया का उपयोग अपने शैक्षणिक स्तर में सुधार करने के लिये अधिक से अधिक करने की आवश्यकता है।
- सोशल नेटवर्किंग का छात्रों के पढाई पर बहुत ज्यादा प्रभाव पडता है इसलिये महाविद्यालयों में छात्रों के रूचि के अनुसार शिक्षा दी जायें जिससे वे अपना मन पढाई की ओर अधिक लगा सकें और सोशल मीडिया की ओर उनका कम से कम समय दे सकें।

संदर्भः–

- राकेश कुमार, (2015), 'सोशल नेटवर्किंगः कल और आज', रिगी पब्लिकेशन्स, पंजाब।
- रानी संगीता डॉ. (2023), 'सोशल मीडिया संभावनाएं और चुनौतियां', श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली।
- शेखर हिमांशु, (2011), 'मीडिया का बदलता चरित्र', डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली।